www.ijarp.com ISSN 2456-9992 Page: 01-08
International Journal Advanced Research Publications
Review Article
Volume: 02
Issue: 07

शिक्षा के द्वारा राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में आर्थिक कारकों की भूमिका

*[1]डॉ॰ अंजलि सिंह, [2]प्रो॰ छत्रसाल सिंह

[1]एसोसिएट प्रोफेसर ,अर्थशास्त्र विभाग डॉ॰ शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

[2]आचार्य (शिक्षाशास्त्र), शिक्षा विद्या शाखा उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

Article Received: 05 June 2026, Article Revised: 25 June 2026, Published on: 15 July 2026

***Corresponding Author: डॉ॰ अंजलि सिंह**
एसोसिएट प्रोफेसर ,अर्थशास्त्र विभाग डॉ॰ शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)
Doi: https://doi-doi.org/101555/ijarp.7721

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक विकास की आधारशिला है। किसी देश के राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति उसके नागरिकों की शिक्षा, कौशल, जागरूकता तथा उत्पादकता पर निर्भर करती है। राष्ट्रीय लक्ष्य जैसे– आर्थिक विकास, सामाजिक समानता, आत्मनिर्भरता, वैज्ञानिक प्रगति, रोजगार सृजन, गरीबी उन्मूलन तथा राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति में शिक्षा की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। परंतु शिक्षा की सफलता केवल शैक्षिक नीतियों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि आर्थिक कारक भी इसके विकास और प्रभावशीलता को निर्धारित करते हैं।

आर्थिक कारक शिक्षा की उपलब्धता, गुणवत्ता, समान अवसर, संसाधनों के वितरण तथा मानव संसाधन विकास को प्रभावित करते हैं। इसलिए शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति में आर्थिक कारकों का विशेष महत्व है।

मुख्य शब्द – आत्मनिर्भरता, आर्थिक विकास, राष्ट्रीय लक्ष्य, सामाजिक समानता, लोकतांत्रिक मूल्य।

राष्ट्रीय लक्ष्यों की अवधारणा

राष्ट्रीय लक्ष्य वे उद्देश्य हैं जिन्हें कोई राष्ट्र अपने नागरिकों के सर्वांगीण विकास, सामाजिक कल्याण तथा आर्थिक प्रगति के लिए निर्धारित करता है। भारत के प्रमुख राष्ट्रीय लक्ष्य निम्नलिखित हैं—

1. आर्थिक विकास एवं आत्मनिर्भरता।
2. गरीबी एवं बेरोजगारी का उन्मूलन।

3. सामाजिक समानता एवं न्याय की स्थापना।
4. राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता।
5. वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति।
6. लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास।
7. मानव संसाधन का विकास।
8. सतत विकास एवं पर्यावरण संरक्षण।

इन सभी लक्ष्यों की प्राप्ति में शिक्षा एक प्रभावी माध्यम है, किंतु शिक्षा की सफलता के लिए आर्थिक कारकों का सुदृढ़ होना आवश्यक है।

शिक्षा में आर्थिक कारकों की परिभाषा

शिक्षा के क्षेत्र में **आर्थिक कारक** (Economic Factors) से आशय उन सभी आर्थिक परिस्थितियों, संसाधनों और व्यवस्थाओं से है, जो शिक्षा की उपलब्धता, गुणवत्ता, विकास और प्रभावशीलता को प्रभावित करते हैं। इनमें व्यक्ति, परिवार, समाज तथा सरकार की आर्थिक स्थिति, शिक्षा पर होने वाला व्यय, विद्यालयों की आधारभूत सुविधाएँ, छात्रवृत्ति, शिक्षकों का वेतन तथा शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता आदि शामिल हैं।

विद्वानों के अनुसार परिभाषा

"वे सभी आर्थिक तत्व जो शिक्षा की योजना, संचालन, अवसरों और परिणामों को प्रभावित करते हैं, आर्थिक कारक कहलाते हैं।"

सरल शब्दों में

आर्थिक कारक वे तत्व हैं जो यह निर्धारित करते हैं कि किसी व्यक्ति या समाज को शिक्षा प्राप्त करने के लिए कितने संसाधन उपलब्ध हैं और शिक्षा की गुणवत्ता किस स्तर की होगी।

उदाहरण

1. परिवार की आय
2. सरकार द्वारा शिक्षा पर व्यय
3. विद्यालयों की आधारभूत सुविधाएँ
4. छात्रवृत्ति एवं आर्थिक सहायता
5. शिक्षकों का वेतन और प्रशिक्षण

6. पुस्तकों, तकनीकी संसाधनों और शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता।

अतः, **शिक्षा में आर्थिक कारक वे सभी आर्थिक संसाधन और परिस्थितियाँ हैं जो शिक्षा की पहुँच, गुणवत्ता और विकास को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं।**

शिक्षा और आर्थिक कारकों का संबंध

शिक्षा तथा अर्थव्यवस्था का संबंध अत्यंत घनिष्ठ है। एक मजबूत अर्थव्यवस्था गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करती है और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाती है। शिक्षा मानव पूंजी का निर्माण करती है, जिससे उत्पादन, रोजगार और आय में वृद्धि होती है।

राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति में आर्थिक कारकों की भूमिका

1. शिक्षा के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधन

शिक्षा व्यवस्था के विकास के लिए पर्याप्त आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। विद्यालयों, महाविद्यालयों, पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं, डिजिटल उपकरणों तथा प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यवस्था के लिए सरकार को पर्याप्त धन व्यय करना पड़ता है। यदि शिक्षा पर पर्याप्त निवेश किया जाए तो राष्ट्रीय विकास की गति तीव्र हो जाती है।

2. मानव संसाधन का विकास

आर्थिक निवेश के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जाती है, जिससे कुशल, प्रशिक्षित तथा उत्पादक मानव संसाधन तैयार होते हैं। शिक्षित एवं कुशल मानव संसाधन किसी भी राष्ट्र की आर्थिक प्रगति का आधार होते हैं।

3. गरीबी उन्मूलन में योगदान

आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को छात्रवृत्ति, निःशुल्क शिक्षा, मध्याह्न भोजन तथा अन्य सहायता योजनाओं के माध्यम से शिक्षा उपलब्ध कराई जाती है। इससे गरीब वर्ग के बच्चे शिक्षा प्राप्त कर बेहतर रोजगार प्राप्त करते हैं और गरीबी का दुष्चक्र समाप्त होता है।

4. रोजगार सृजन और आर्थिक विकास

व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा के विकास के लिए आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। जब सरकार कौशल विकास और तकनीकी शिक्षा में निवेश करती है, तब युवाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं और राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है।

5. सामाजिक समानता की स्थापना

आर्थिक संसाधनों के उचित वितरण से समाज के सभी वर्गों को समान शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराए जा सकते हैं। इससे सामाजिक असमानता कम होती है और सामाजिक न्याय की स्थापना होती है।

6. वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति

वैज्ञानिक अनुसंधान, तकनीकी शिक्षा तथा नवाचार के लिए आर्थिक सहायता अत्यंत आवश्यक है। उच्च शिक्षा संस्थानों और अनुसंधान केंद्रों को पर्याप्त वित्तीय सहायता प्रदान करके राष्ट्र विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति कर सकता है।

7. ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों का विकास

आर्थिक सहायता द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालयों, पुस्तकालयों, डिजिटल शिक्षा केंद्रों तथा प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यवस्था की जा सकती है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों का शैक्षिक एवं आर्थिक विकास संभव होता है।

8. महिला शिक्षा और सशक्तिकरण

आर्थिक सहायता के माध्यम से बालिकाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाता है। छात्रवृत्ति, निःशुल्क शिक्षा तथा अन्य योजनाओं के कारण महिलाओं की शिक्षा का स्तर बढ़ता है, जिससे राष्ट्रीय विकास में उनकी सहभागिता बढ़ती है।

9. डिजिटल शिक्षा का विकास

वर्तमान समय में शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) का महत्व बढ़ गया है। डिजिटल शिक्षा के लिए कंप्यूटर, इंटरनेट, स्मार्ट कक्षाएँ तथा ऑनलाइन शिक्षण संसाधनों की आवश्यकता होती है, जिसके लिए पर्याप्त आर्थिक निवेश आवश्यक है।

10. आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान

आर्थिक रूप से समर्थ शिक्षा प्रणाली युवाओं को कौशल, उद्यमिता तथा नवाचार के लिए तैयार करती है। इससे आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को साकार करने में सहायता मिलती है।

भारत में शिक्षा के आर्थिक विकास हेतु प्रमुख पहलें

भारत सरकार ने शिक्षा के विकास के लिए अनेक योजनाएँ प्रारंभ की हैं, जैसे—

- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) द्वारा गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक सामग्री का विकास।
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा उच्च शिक्षा संस्थानों को वित्तीय सहायता।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत शिक्षा में निवेश और डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा।

- स्किल इंडिया मिशन के माध्यम से कौशल विकास।
- समग्र शिक्षा अभियान तथा छात्रवृत्ति योजनाओं का संचालन।

शिक्षा के आर्थिक विकास में चुनौतियाँ

1. शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद का अपेक्षाकृत कम व्यय।
2. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में संसाधनों की असमानता।
3. गरीबी एवं बेरोजगारी के कारण विद्यालय छोड़ने की समस्या।
4. तकनीकी संसाधनों की कमी।
5. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सभी की समान पहुँच का अभाव।

सुझाव

1. शिक्षा पर सरकारी व्यय में वृद्धि की जाए।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक अवसंरचना का विकास किया जाए।
3. व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा दिया जाए।
4. आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को अधिक सहायता प्रदान की जाए।
5. डिजिटल शिक्षा के संसाधनों का विस्तार किया जाए।

विकसित भारत के संदर्भ में शिक्षा और उसमें निहित आर्थिक कारक

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास का आधार होती है। एक विकसित राष्ट्र के निर्माण में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि शिक्षा ही मानव संसाधनों को कुशल, उत्पादक और नवाचार के योग्य बनाती है। भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत "विकसित भारत 2047" का लक्ष्य देश को आर्थिक, सामाजिक एवं तकनीकी रूप से एक सशक्त राष्ट्र के रूप में स्थापित करना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति में शिक्षा और उससे जुड़े आर्थिक कारकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

विकसित भारत और शिक्षा

विकसित भारत का तात्पर्य ऐसे राष्ट्र से है जहाँ प्रत्येक नागरिक को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार तथा समान अवसर प्राप्त हों। शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान, कौशल, नैतिक मूल्यों और रोजगारपरक दक्षताओं से संपन्न बनाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षा को भारत के समग्र विकास का आधार मानती है तथा गुणवत्तापूर्ण, समावेशी और कौशल-आधारित शिक्षा पर बल देती है।

शिक्षा में निहित आर्थिक कारक

1. शिक्षा पर सरकारी व्यय

किसी देश की शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता उसके शिक्षा पर होने वाले सार्वजनिक निवेश पर निर्भर करती है। विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, पुस्तकालयों तथा अनुसंधान संस्थानों के विकास के लिए पर्याप्त आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता होती है।

2. मानव पूंजी निर्माण

शिक्षा मानव पूंजी में निवेश का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है। शिक्षित और कुशल मानव संसाधन उत्पादन क्षमता को बढ़ाते हैं, जिससे राष्ट्रीय आय और आर्थिक विकास में वृद्धि होती है।

3. रोजगार और आय में वृद्धि

शिक्षा व्यक्ति को रोजगार प्राप्त करने तथा बेहतर आय अर्जित करने में सक्षम बनाती है। उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षा के माध्यम से रोजगार के नए अवसर उत्पन्न होते हैं, जिससे गरीबी और बेरोजगारी में कमी आती है।

4. कौशल विकास और उद्यमिता

विकसित भारत के लिए केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि कौशल-आधारित शिक्षा और उद्यमिता का विकास भी आवश्यक है। कौशल विकास से युवा आत्मनिर्भर बनते हैं और नए रोजगार सृजित करते हैं।

5. तकनीकी एवं डिजिटल संसाधन

आधुनिक शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT), डिजिटल उपकरण, इंटरनेट तथा स्मार्ट कक्षाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। इन सुविधाओं की उपलब्धता आर्थिक संसाधनों पर निर्भर करती है।

6. समान शैक्षिक अवसर

आर्थिक असमानता शिक्षा तक पहुँच को प्रभावित करती है। गरीब और ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए छात्रवृत्ति, निःशुल्क शिक्षा, मध्याह्न भोजन तथा अन्य कल्याणकारी योजनाओं की आवश्यकता होती है।

7. अनुसंधान और नवाचार

विकसित राष्ट्र बनने के लिए अनुसंधान, विज्ञान और नवाचार में निवेश आवश्यक है। उच्च शिक्षा संस्थानों में अनुसंधान के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधन उपलब्ध होने चाहिए, जिससे नई तकनीकों और ज्ञान का विकास हो सके।

विकसित भारत के निर्माण में शिक्षा की आर्थिक भूमिका

1. राष्ट्रीय उत्पादकता में वृद्धि।
2. बेरोजगारी और गरीबी में कमी।
3. सामाजिक एवं आर्थिक असमानताओं का निवारण।
4. तकनीकी प्रगति और नवाचार को बढ़ावा।
5. आत्मनिर्भर भारत और वैश्विक प्रतिस्पर्धा को सुदृढ़ करना।
6. सतत आर्थिक विकास और सामाजिक समृद्धि को सुनिश्चित करना।

विकसित भारत के निर्माण में शिक्षा और आर्थिक कारकों का संबंध अत्यंत घनिष्ठ है। शिक्षा पर किया गया निवेश केवल मानव विकास ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आर्थिक विकास का भी आधार बनता है। यदि भारत को वर्ष 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनाना है, तो शिक्षा के क्षेत्र में पर्याप्त निवेश, कौशल विकास, डिजिटल समावेशन, अनुसंधान तथा समान शैक्षिक अवसरों को प्राथमिकता देनी होगी। शिक्षा में निहित आर्थिक कारकों का समुचित विकास ही विकसित भारत के सपने को साकार कर सकता है।

उपसंहार

शिक्षा राष्ट्रीय विकास का सबसे प्रभावी साधन है और आर्थिक कारक इसकी सफलता की आधारशिला हैं। पर्याप्त आर्थिक संसाधनों, उचित निवेश तथा समावेशी शैक्षिक नीतियों के माध्यम से शिक्षा को सशक्त बनाया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति तभी संभव है जब सरकार, समाज तथा निजी क्षेत्र मिलकर शिक्षा में निवेश करें और प्रत्येक नागरिक को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराएँ। इस प्रकार आर्थिक कारक शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण, सामाजिक परिवर्तन तथा सतत विकास के प्रमुख आधार बनते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, जे.सी. (2010). *शिक्षा का दर्शन एवं समाजशास्त्र*। नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
2. भटनागर, आर.पी. एवं अग्रवाल, विद्या (2014). *शैक्षिक प्रशासन एवं नियोजन*। मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
3. पाण्डेय, रामशकल (2018). *भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ*। आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
4. शर्मा, आर.ए. (2016). *शिक्षा समाजशास्त्र*। मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
5. सक्सेना, एन.आर. स्वारूप (2017). *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार*। मेरठ: सूर्या पब्लिकेशन।
6. सिंह, आर.पी. (2019). *भारतीय शिक्षा प्रणाली एवं समकालीन परिप्रेक्ष्य*। नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।

7. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020*। नई दिल्ली: भारत सरकार।
8. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (2021)। भारत में उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए गुणवत्ता अधिदेश। नई दिल्ली
9. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (2023)। भारत में स्कूली शिक्षा: रुझान और चुनौतियाँ। नई दिल्ली
10. यूनेस्को (2021)। एक साथ हमारे भविष्य की पुनर्कल्पना: शिक्षा के लिए एक नया सामाजिक अनुबंध। पेरिस।
11. विश्व बैंक (2018)। विश्व विकास रिपोर्ट 2018: शिक्षा के वादे को साकार करना सीखना। वाशिंगटन, डी.सी.
12. आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (2022)। शिक्षा एक नजर में 2022: ओईसीडी संकेतक। पेरिस।
13. नीति आयोग (2024)। विकसित भारत@2047: विज़न दस्तावेज़। नई दिल्ली।
14. सेन, अमर्त्य (2000). *विकास के रूप में स्वतंत्रता* (अनुवादित संस्करण)। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।